Deg-1
इतिहास p-I



## बुलन्दशहर, मेरठ और दिल्ली की विजय –

कुतुबुद्दीन ऐबक के हाथ जीते हुए प्रदेशों का प्रबन्ध भार सौंप कर मुहम्मद गोरी गजनी लौट गया। गोरी के वापस जाने के बाद पृथ्वीराज का भाई हरिराय ने विद्रोह की ~~घोषना~~ घोषणा कर रणथम्भौर पर घेरा डाल दिया। ऐबक ने उसके विद्रोह को कुचल डाला और पृथ्वीराज के एक पुत्र को अजमेर का शासक बना दिया। परन्तु ऐबक की गजनी जाने की सूचना पाकर हरिराय पुनः विद्रोह का स्वर ~~पुनः~~ बुलन्द करने लगा। उसने पृथ्वीराज के पुत्र को अजमेर से मार भगाया। हरिराय ने दिल्ली पर आक्रमण की तैयारी की और उसका नेतृत्व जतराय नामक सेनापति को सौंप दिया। कुतुबुद्दीन ऐबक ने सम्भावित आक्रमण को विफल कर दिया और हरिराय ने आत्महत्या कर ली।

अजमेर के पास मेद राजपूतों ने तुर्कों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया जिसका नेतृत्व जटवन नामक एक हिन्दू सरदार कर रहा था विद्रोहियों ने हाँसी को घेर लिया था। कुतुबुद्दीन ऐबक ने बागर में जटवन के साथ युद्ध किया। जटवन युद्ध में मारा गया और हाँसी पर तुर्कों का अधिकार हो गया। बुलन्दशहर के राजपूतों को भी पराजित कर ऐबक ने उस पर अधिकार कर लिया। 1192 ई० में

P.T.O

Scanned with CamScanner

मेरठ की विजय ऐबक ने किया था। 1193 ई० में दिल्ली के तोमर राजा को हराकर दिल्ली पर भी अधिकार कर लिया गया। इस घटना के बाद ऐबक गजनी चला गया और वहाँ से लौटने पर उसने 1194 ई० में कोयल (अलीगढ) पर विजय प्राप्त की। इस प्रकार मुहम्मद गोरी की अनुपस्थिति में कुतुबुद्दीन ऐबक ने मेरठ, दिल्ली, बुलन्दशहर, अलीगढ हाँसी आदि स्थानों पर विजय प्राप्त कर तुर्क साम्राज्य की नींव को सुदृढ़ कर लिया।